AJIS

Aligarh Journal of Interfaith Studies(AJIS)

International Peer Reviewed, , Open Access Journal

ISSN: (in process) | Impact Factor | ESTD Year 2020

बौद्ध साहित्य में प्रतीत्यसमुत्पाद का वैशिष्ट्य

डॉ. विकास सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

संस्कृत विभाग, मारवाड़ी कॉलेज

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा (भारत)

ईमेल - vikas.sing.gautam@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Article History:
Published Online: _Published_

Keywords:
प्रतीत्यसमुत्पाद , अनुलोम , प्रतिलोम , शून्यवाद , माध्यमिक , निःस्वभावता,

ABSTRACT

प्रतीत्यसमुत्पाद गौतम बुद्ध की देशनाओं का केन्द्रीय सिद्धान्त है । इसी के अनुलोमात्मक एवं प्रतिलोमात्मक साक्षात्कार से राजकुमार सिद्धार्थ ने बुद्धत्व का अधिगम किया । यह विशिष्ट प्रकार की प्रज्ञा भूमि है । प्रतीत्यसमुत्पाद का तात्विक चिन्तन निःस्वभावता की व्याख्या करना है । यह गम्भीरतम धर्म है । गौतम बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद और धर्म को अभिन्न मानते हुये कहा है कि जो प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है , वह धर्म को देखता है तथा जो धर्म को देखता है , वह प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है । प्रतीत्यसमुत्पाद को शून्यता के रूप में स्थापित किया माध्यमिक आचार्य नागार्जुन और उनकी शिष्य परम्परा ने ।

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

	प्रकृत शोध पत्र में पालि ग्रंथ दीघनिकाय और मज्झिमनिकाय के साथ - साथ मूलमाध्यमिककारिका , चतुःस्तवः , प्रसन्नपदा , विग्रहव्यावर्तनी , बोधिचर्यावतार आदि महायान ग्रंथों के आधार पर बौद्ध साहित्य में वर्णित प्रतीत्यसमुत्पाद के वैशिष्ट्य को विवेचित किया गया है ।

प्रतीत्यजानां भावानां नैःस्वाभाव्यां जगाद यः।

तं नमामि सदा बुद्धमचिन्त्यमनिदर्शनम्॥[1]

बौद्ध दर्शन के शून्यवादी आचार्य नागार्जुन प्रकृत कारिका के माध्यम से प्रतीत्यसमुत्पन्न भावों की निःस्वभावता का कथन करने वाले, अचिन्त्य तथा अनुपम ज्ञान से सम्पन्न गौतम बुद्ध को नमन करते हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद गौतम बुद्ध की देशनाओं का केन्द्रीय सिद्धान्त है। इसी के साक्षात्कार से राजकुमार सिद्धार्थ ने बुद्धत्व का अधिगम किया। यह विशिष्ट प्रकार की प्रज्ञा भूमि है। प्रतीत्यसमुत्पाद का तात्त्विक चिन्तन निःस्वभावता की व्याख्या करना है। अविद्यादि द्वादशाङ्गों के अनुलोमप्रतिलोम ढंग -

[1] *चतुःस्तवः,* 3/1

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

से प्रतीत्यसमुत्पाद का अवगाहन जितना सरल प्रतीत होता है, वैसा यह नहीं है। गौतम बुद्ध ने इसे अत्यन्त गम्भीर कहा है। आचार्य नागार्जुन ने सुहृल्लेख में कहते हैं-

गम्भीरोऽनर्घकोशः प्रियः प्रतीत्योत्पादो जिनवचनानाम्।
सम्यगिमं यः पश्यति स च पश्यति तत्त्वदर्शिनं बुद्धमेव॥[2]

अर्थात् प्रतीत्यसमुत्पाद जिनेन्द्रिय गौतम बुद्ध के वचनों के भण्डार का बहुमूल्य रत्न एवं गम्भीरतम धर्म है। जो कोई इसे सम्यक् रूप से देखता है, वह तत्त्वद्रष्टा बुद्ध को ही देखता है। गौतम बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद और धर्म को अभिन्न मानते हुये कहा है -

यो पटिच्चसमुप्पादं पस्सति सो धम्मं पस्सति;
यो धम्मं पस्सति सो पटिच्चसमुप्पादं पस्सतीति।[3]

अर्थात् जो प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है, वह धर्म को देखता है तथा जो धर्म को देखता है, वह प्रतीत्यसमुत्पाद को देखता है। *चतुःस्तव* में आचार्य नागार्जुन ने

[2] *सुहृल्लेख,* 112, पृ .137

[3] *मज्झिमनिकाय,* 1/3/8, पृ .251

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

प्रतीत्यसमुत्पाद और शून्यता को एक कहा गया है। तथागत ने जिसे प्रतीत्यसमुत्पाद कहा हैवही शून्यता है। ,[4] *माध्यमिककारिका* और *विग्रहव्यावर्तनी* में भी नागार्जुन ने शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद को अभिन्न बतलाया है।[5] इन दोनों शब्दों का आशय एक ही है। नागार्जुन के अनुसार शून्यता अथवा प्रतीत्यसमुत्पाद उसी के लिये प्रभावी है , ,जिसके लिये सभी अर्थों की वास्तविकता प्रभावी है। जिसके लिये शून्यता प्रभावी नहीं उसके लिये कुछ भी प्रभावी नहीं।[6] शून्यता को जान लेने वाला व्यक्ति प्रतीत्यसमुत्पाद की यथार्थता को सम्यक्तया जान लेता है। *माध्यमिककारिका* में कहा गया है कि जिसके लिये शून्यता युक्तियुक्त है उसके लिये सब युक्तियुक्त है तथा जिसके लिये शून्य युक्तियुक्त नहीं उसके लिये कुछ भी युक्तियुक्त नहीं है।[7] नागार्जुन का हृदय अपार श्रद्धा

---

[4] यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यता सैव ते मता। *चतुःस्तवः*1 ,/22, पृ .14 ;3/40.पृ ,60

[5] यः प्रतीत्यसमुत्पादः शून्यतां तां प्रचक्षमहे। *मध्यमकशास्त्रम्*24 ,/18, पृ .26 ;यः शून्यतां प्रतीत्यसमुत्पादं मध्यमां प्रतिपदमनेकार्थाम्। *विग्रहव्यावर्तनी* ,71 .पृ ,64

[6] प्रभवति च शून्यतेयं यस्य प्रभवन्ति तस्य सर्वार्थाः। प्रभवति न तस्य किं न भवति शून्यता यस्येति॥ *विग्रहव्यावर्तनी* ,70 ,पृ .64

[7] सर्वं च युज्यते तस्य शून्यता यस्य युज्यते। सर्वं न युज्यते तस्य शून्यं यस्य न युज्यते॥ *मध्यमकशास्त्रम्*24 ,/14, पृ .25

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

से पूरित हो उठता है और वे वंदन करने लगते हैं उस तथागत बुद्ध को जिन्होंने अष्टविध विशेषताओं से सम्पन्न प्रतीत्यसमुत्पाद की देशना दी-

अनिरोधमनुत्पादमनुच्छेदमशाश्वतम्। अनेकार्थमनानार्थमनागममनिर्गमम्॥
यः प्रतीत्यसमुत्पादं प्रपञ्चोपशमं शिवम्। देशयामास सम्बुद्धस्तं वन्दे वदतां वरम्॥[8]

अर्थात् न निरोध, न उत्पत्ति, न अनित्य, न नित्य, न एक, न अनेक, न आना, न जाना। इन विशेषताओं से युक्त प्रपञ्चोपशम अर्थात् वाणी से जिसे कहा न जा सके और शिव अर्थात् कल्याणकारी प्रतीत्यसमुत्पाद के उपदेष्टा बुद्ध की वन्दना नागार्जुन करते हैं। आचार्य नागार्जुन आठ प्रकार के निषेधों के द्वारा प्रतीत्यसमुत्पाद की अष्टविध विशेषताओं को बताते हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद से युक्त चित्त ही समग्र जगत् के लोगों के लिये यह कामना कर सकता है –

मा कश्चिद् दुःखितः सत्त्वो मा पापी मा च रोगितः।
मा हीनः परिभूतो वा मा भूत् कश्चिच्च दुर्मनाः॥[9]

---

[8] *मध्यमकशास्त्रम्*1 ,/1-2, पृ .1

[9] *बोधिचर्यावतार,* 10/41, पृ .335

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

अर्थात् इस जगत् में कोई भी जीव दुःखी न हो, न पापी हो, न रोगी हो, न हीन हो, न तिरस्कृत हो और न ही दुष्टचित्त हो। सबका कल्याण तथा सबका विकास ही मानव जीवन का ध्येय है। समाज के प्रत्येक स्तर पर चाहें वह परिवार हो, कुटुम्ब हो, राष्ट्र हो अथवा विश्व या समग्र ब्रह्माण्ड हो, इन सब स्तर पर मानव को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ निःस्वभावता एवं मानवीय करुणा को बढाते हुए सहजीवी व समावेशी की अवधारणाओं से संयुक्त विचारों को अग्रसर करना चाहिये।

प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुलोमात्मक एवं प्रतिलोमात्मक ज्ञान से, लगभग सामान्य युग से छठी शताब्दी पूर्व शाक्यकुलोत्पन्न राजकुमार सिद्धार्थ ने 'बोधि' अर्जित कर सम्यक् सम्बुद्धत्व की प्राप्ति की। उन्होंने संसार में व्याप्त जरामरणादि दुःखों के कारणभूत - तृष्णा को जानकर, प्रतीत्यसमुत्पाद के माध्यम से तृष्णानिरोध -खनिरोध करते हुए दुः-गामिनी प्रतिपदा अर्थात् अष्टाङ्गिक मार्ग को खोज लिया। उनका नाम यद्यपि सिद्धार्थ गौतम था किन्तु उन्होंने स्वयं को बुद्ध कहा। भरतसिंह उपाध्याय का मानना है कि 'बुद्ध' नाम उनका स्वयं साक्षात्कृत नाम था, जो उन्हें बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त -

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

ए मिला था।करते हु[10] यह नाम उन्हें उनकी माता महामाया, पिता शुद्धोधन, शाक्य बन्धुओं, भगवती कृपा अथवा ईश्वर ने नहीं दिया, अपितु स्वयं के पुरुषार्थ से उन्होंने इसे अर्जित किया था। मज्झिमनिकाय के सेलसुत्त में बुद्ध शब्द को उपपद बताया गया है, न कि व्यक्तिवाचक सञ्ज्ञा। बुद्ध जागृत पुरुष को कहते हैं। बुद्ध का आविर्भाव बोधि से होता है, माता के गर्भ से नहीं। अतः एव कहा भी गया है कि बुद्ध पुरुष का आविर्भाव लोक में अतिदुर्लभ है, किन्तु जगत् के लिये सुखकारी होता है। दीघनिकाय के सामञ्ञफलसुत्त में बुद्ध की विभिन्न विशेषताओं को निरूपित करते हुए बताया है-

इतिपि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू

अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथी सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति।[11]

अर्थात् बुद्ध राग, द्वेष, मोह को भग्न करने वाले भगवान्, मार रूपी अरि को हत करने वाले अर्हत्, स्वयं अपने परिश्रम से सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने से सम्यक् सम्बुद्ध, विद्या

[10] *बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन,* प्रथम भाग, पृ .196

[11] *दीघनिकाय,* 2/3, पृ .73; *मज्झिमनिकाय,* 2/5/2, पृ .355

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

एवं आचरण से युक्त, उत्तम गति को प्राप्त, समस्त लोकों के ज्ञाता, अनुत्तर, पथ से भ्रष्ट लोगों को मार्गपर लाने वाले सारथी, देवों और मानवों के शास्ता हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सिद्धार्थ को बुद्धत्व के रूप में प्रतीत्यसमुत्पाद का ज्ञान हुआ, जिसने बुद्ध को न केवल भारतीय इतिहास में अपितु वैश्विक इतिहास में एक कालजयी महापुरुष बना दिया। गौतम बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद की अनुलोम-प्रतिलोमात्मक ढंग से द्विविध देशना की है।

1. इसके होने पर यह होता है, इसके उत्पाद से इसका उत्पाद होता है।)**इमस्मिं सति इदं होति, इमस्सुप्पादा इदं उप्पज्जति**(

2. इसके न होने पर यह नहीं होता, इसके निरोध से यह निरुद्ध हो जाता है।)**इमस्मिं असति इदं न होति, इमस्स निरोधा इदं निरुज्झति**।(

इनमें प्रथम देशना उत्पत्ति भाव को दर्शाती है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। यदि बीज होगा तो अङ्कुर भी होगा, क्योंकि बीज के उत्पाद से ही अङ्कुर की उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार अङ्कुर से पत्र, पत्र से काण्ड, काण्ड से नाल, नाल से

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

गण्ड, गण्ड से गर्भ, गर्भ से शुक, शुक से पुष्प तथा पुष्प से फल होता है। केवल उत्पत्तिमात्र का ज्ञान ही प्रतीत्यसमुत्पाद नहीं है, अपितु द्वितीय देशना निरोधात्मक भाव को भी दर्शाती है। यदि बीज नहीं होगा तो अङ्कुर भी नहीं होगा, क्योंकि बीज के निरोध पर ही अङ्कुर का निरोध निर्भर है। इसी प्रकार अङ्कुर के निरोध से पत्रादि का निरोध जानना चाहिये। अविद्यादि द्वादशाङ्गों के आधार पर बुद्ध ने भवचक्र की उत्पत्ति और निरोध को स्पष्ट किया है। अविद्यादि के होने पर ही संस्कारादि होते हैं, न होने पर नहीं होते। पूर्वभव के होने पर प्रत्युत्पन्नभव होता है और (वर्तमान भव) होता है। (भविष्य भव) र अनागतभवप्रत्युत्पन्नभव के होने प

इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद से समन्वित जिस बौद्धिक एवं सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारतीय इतिहास में भगवान् बुद्ध ने किया, जिसने व्यापक स्तर पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा अन्य विविध प्रकार के परिवर्तनों को जन्म दिया। गौतम बुद्ध ने चार आर्यसत्यों का ज्ञान प्राप्त कर, मानवों के कल्याणार्थ उसका उपदेश किया जिसे धम्मचक्कपवत्तन कहा गया। उस धम्मचक्र को ऐतिहासिक रूप से अजातशत्रु, कालाशोक, सम्राट अशोक, कनिष्क, कुमारगुप्त, गौतमीपुत्र शातकर्णी, हर्षवर्धन आदि अनेक शासकों ने आगे बढाया तो नागार्जुन,

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, सरहपा जैसे कोटि विद्वानों ने सींचा हैं, आधुनिक भारत में उस धम्मचक्र को पुनः गति बोधिसत्त्व डॉ अम्बेडकर ने .14 अक्टूबर 1956 को भन्ते चन्द्रमणि से अपने लाखों अनुयायियों के साथ त्रिशरण ग्रहण करके दी, जिसके बाद भारत में भी श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, मलेशिया, चीन, जापान, कोरिया, वियतनाम, लाओस, मंगोलिया, भूटान आदि सैंकड़ों देशों की तरह बौद्ध धर्म और उसकी शिक्षाओं का प्रचारप्रसार हो रहा है। निस्सन्देह तथागत बुद्ध ही एकमात्र ऐसे - महापुरुष हैं, जिनकी मूर्तियाँ, चित्र तथा विचार हमें विभिन्न धार्मिक मतमतान्तरों - को मानने वालों के घर मिल जाते हैं। बुद्धऐसे व्यक्ति हैं, जो तार्किकता और अनुभूतिगम्य ज्ञान की बात करते हैं तथा उनके विचार आधुनिक विज्ञान के समकक्ष ठहरते हैं।

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

सन्दर्भ ग्रंथ

चतुःस्तवः, नागार्जुन ,अनुवादक – ज्ञलछेन नमडोल ,सारनाथ :केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान ,प्रथम संस्करण ,2001.

दीघनिकायो) दुतियो भागो - महावग्गपाळि(, धम्मगिरि-पालि-ग्रन्थमाला, इगतपुरी :विपश्यना विशोधन विन्यास, प्रथम आवृत्ति, 1998.

बोधिचर्यावतार) प्रज्ञाकरमतिकृतपञ्जिकासहिता(, शान्तिदेव ,सम्पादक व अनुवादक - द्वारिकादास शास्त्री ,वाराणसी :बौद्धभारती ,2001.

बौद्धदर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन) प्रथम भाग(, भरतसिंह उपाध्याय, दिल्ली :मोतीलाल बनारसीदास,1996 .

मज्झिमनिकायपाळि) दुतियो भागो - मज्झिमपण्णासपाळि(, धम्मगिरि-पालि-ग्रन्थमाला, इगतपुरी :विपश्यना विशोधन विन्यास, प्रथम आवृत्ति, 1998.

मज्झिमनिकायपाळि) पठमो भागो - मूलपण्णासपाळि(, धम्मगिरि-पालि-ग्रन्थमाला, इगतपुरी :विपश्यना विशोधन विन्यास, प्रथम आवृत्ति, 1998.

International
Peer-Reviewed Journal
June 2020, Volume 1, Issue 2

मध्यमकशास्त्रम्) चन्द्रकीर्तिप्रणीताप्रसन्नपदावृत्तिसहिता(, नागार्जुन ,सम्पादक – द्वारिकादास शास्त्री ,भावानुवादक – नरेन्द्र देव ,वाराणसी :बौद्धभारती ,प्रथम संस्करण ,1983.

विग्रहव्यावर्तनी) स्वोपज्ञवृत्तिसहिता(, नागार्जुन ,सम्पादक व अनुवादक – द्वारिकादास शास्त्री ,वाराणसी :बौद्धभारती ,प्रथम संस्करण ,1994.

सुहृल्लेखः ,(आचार्यमहामतिविरचिताव्यक्तपदाटीकासहिता(, नागार्जुन , सम्पादक – पेमा तेनजिन ,सारनाथ :केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान ,प्रथम संस्करण ,2002.